शान्तिकुण्ड-ब्रह्मपुर। 'मानसिक परिवर्तन में आध्यात्मिक चिन्तन की भूमिका' कार्यक्रम में अपने विचार रखते हुए राधाकान्त मठ के महन्त कृष्ण गोपाल महाराज। मंचासीन हैं विधायक डॉ.रमेश चन्द्र पटनायक, डॉ.शरत चन्द्र नायक, बिशप साउथ ओडिशा, महान संघ के अध्यक्ष सुशांत साबत, ब्र.कु.मंजु तथा ब्र.कु.माला।

डाकपत्थर। पुलिस अधीक्षक रामनरेश शर्मा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सविता।

दिल्ली-लॉरेन्स रोड। टेलि कम्यूनिकेशन कन्सल्टेन्ट इंडिया लिमिटेड कम्पनी में 'तनाव मुक्त प्रबंधन' कार्यक्रम के पश्चात ब्र.कु.लक्ष्मी तथा अधिकारी व स्टॉफ समूह चित्र में।

दिल्ली -डिफेंस कॉलोनी। प्राथमिक विद्यालय के ट्रेनी शिक्षकों के साथ नैतिक तथा आध्यात्मिक चर्चा करते हुए ब्र.कु.अनुज।

लोधी रोड-दिल्ली। एन.टी.पी.सी. लिम. एवं महारत्न कम्पनी के अधिकारी व परिजनों हेतु आयोजित कार्यक्रम में प्रकृति के साथ सामंजस्य विषय पर प्रवचन करते हुए ब्र.कु.पीयूष।

राजीव नगर-दिल्ली। 'चिल्ड्रेन पर्सनालिटी डेविलपमेन्ट समर कैम्प' में ब्र.कु.पूर्णिमा बच्चों को सम्बोधित करते हुए।

चार रत्न

यूनान के महात्मा अफलातून ने मरते समय अपने बच्चों को बुलाया और कहा -''मैं तुम्हें चार-चार रत्न देकर मरना चाहता हूँ। आशा है तुम इन्हें सँभालकर रखोगे। इन रत्नों से अपना जीवन सुखी बनाए रहोगे।'' बच्चों ने रत्न प्राप्ति के लिए हाथ फैलाए तो अफलातून ने इस प्रकार उन्हें रत्न दिए - '' पहला रत्न 'क्षमा' का देता हूँ -तुम्हारे प्रति कोई कुछ भी कहे, तुम उसे विस्मृत करते रहो व कभी उसके प्रतिकार का विचार अपने मन में न लाओ।'' निरहंकार का दूसरा रत्न देते हुए समझाया कि अपने द्वारा किए गए उपकार को भूल जाना चाहिए।

''तीसरा रत्न है - 'विश्वास' -यह बात अपने हृदयपटल पर अंकित किए रखना कि मनुष्य के बूते कभी कुछ भला-बुरा नहीं होता, जो कुछ होता है वह सृष्टि के नियंता के विधान से होता है। चौथा रत्न है 'वैराग्य' -यह सदैव ध्यान में रखना कि एक दिन सबको मरना है।''

सांसारिक सम्पत्ति पाकर तो पता नहीं उनका क्या बनता, पर इन दिव्य गुण रूपी रत्नों का अनुसरण कर निहाल हो गए।

कथा सरिता

बांटो तो..दुःख घटे, सुख बढ़े

एक अस्पताल में दो रोगियों की दोस्ती हो गई। दोनों गंभीर रूप से बीमार थे। यूं तो दोनों को ही उठने की इजाजत नहीं थी, पर दोपहर के खाने के बाद, एक रोगी को उसका भोजन पचाने के लिए बैठाया जाता था। दूसरा रोगी कमरे में पड़े-पड़े नीरस जिन्दगी गुजारने के दुखड़े उससे बांटा करता था। चूंकि पहले रोगी का पलंग कमरे की एकमात्र खिड़की के पास था, लिहाजा, उसने बैठे-बैठे अपने मित्र (दूसरे रोगी) को खिड़की से बाहर के नजारों के बारे में बताने का नियम बना लिया। बाग-बगीचे, झील और उसमें तैरती बत्तखों, पेड़ों पर बसारे बनाती चिड़ियों और बाहर घूमते लोगों के बारे में वो रोज एक घंटे तक विस्तृत वर्णन देता था। दूसरा उठकर देख नहीं पाता था, पर आंखें बंद करके, बाहर की दुनिया के चित्रों को आंखों में संजोता रहता था।

एक दिन खिड़की के पास वाले रोगी की मृत्यु हो गई। दूसरे रोगी ने डॉक्टर से निवेदन किया कि अब उसका पलंग खिड़की के पास लगा दिया जाए, ताकि वो अपने दोस्त के बताए दृश्यों का खुद आनंद ले सके। उसकी बात सुनकर डॉक्टर व नर्स सभी हैरान रह गये। उन्होने दूसरे रोगी को बताया कि पहला रोगी एक असाध्य बीमारी से त्रस्त था और अपनी नेत्र ज्योति खो चुका था। वो दीवार तक भी देख नहीं सकता था, खिड़की से बाहर देखना तो दूर की बात है। तब दूसरे ने जाना कि खिड़की से दूर होने के उसके दुख को कम करने के लिए ही उसका दृष्टिहीन दोस्त दृश्यचित्र खींचता रहता था।

सच ही है, दुख बांटने से आधा हो जाता है, पर खुशी दोगुनी। अगर आपको धन की कमी का दुख है, तो अपनी ऐसी खूबियों को गिनकर देखिए, जिन्हें पैसों से नहीं खरीदा जा सकता। बताइए, क्या तब भी आप खुद को निर्धन कहेंगे? रहे।' यह सुनकर सारी सभा में मौन छा गया।

लगाव

एक व्यक्ति महात्मा बुद्ध के पास आया और बताया कि उसका एकमात्र पुत्र आकस्मिक मृत्यु को प्राप्त हुआ। तभी से उसके शोक में न वह ठीक से सो पाता है और न खाता-पीता है। बस, एक ही आशा में उसका जीवन बचा हुआ है कि कहीं से उसका पुत्र फिर से आ जाएगा। उसकी व्यथा सुनकर बुद्ध बोले, 'लगाव से दुख ही होता है।' उस व्यक्ति ने असहमति जताते हुए कहा, 'आप गलत कह रहे हैं। लगाव से कष्ट नहीं होता। वह तो प्रसन्नता और आनंद देता है।' बुद्ध कुछ और कहते, इसके पहले वह वहां से चला गया।

यह बात सार्वजनिक बहस बनकर राजा प्रसेनजित तक पहुंची। उन्होने रानी के समक्ष हुई बातचीत में बुद्ध को गलत ठहराया। रानी बुद्ध की बात का मर्म जानती थीं, इसलिए उन्होने बुद्ध के द्वारा उस बात के समर्थन में सुनाई गई दो घटनाएं राजा को बताते हुए कहा, 'महाराज! श्रावस्ती में हाल ही एक महिला अपनी मां की मृत्यु होने से दुख में पागल हो गई। लड़की का विवाह किसी और से हो जाने पर उसके प्रेमी ने आत्महत्या कर ली। इससे यही प्रकट होता है कि लगाव से दुख होता है। क्या आप राजकुमारी से प्रेम करते हैं?' राजा चकित होकर बोले, 'अवश्य ही करता हूँ।' रानी ने फिर प्रश्न किया, 'यदि वह किसी दुर्घटना की शिकार हो जाए तो क्या आपको दुख न होगा?' राजा ने स्वीकार किया कि उन्हें दुख होगा। अब वे बुद्ध की बात से पूर्णतः सहमत हुए। वस्तुतः लगाव या प्रेम अल्पकालीन आनंद देता है। प्रिय पात्र के अभाव या उसे कष्ट में देख यह प्रेम दुख में परिणत होकर तकलीफ देता है, इसलिए अपने प्रेम को संयम की लगाम से कस कर रखें।

सुखी कौन ?

एक व्यक्ति महात्मा बुद्ध के पास आया और बताया कि उसका एकमात्र पुत्र आकस्मिक मृत्यु को प्राप्त हुआ। तभी से उसके शोक में न वह ठीक से सो पाता है और न खाता-पीता है। बस, एक ही आशा में उसका जीवन बचा हुआ है कि कहीं से उसका पुत्र फिर से आ जाएगा। उसकी व्यथा सुनकर बुद्ध बोले, 'लगाव से दुख ही होता है।' उस व्यक्ति ने असहमति जताते हुए कहा, 'आप गलत कह रहे हैं। लगाव से कष्ट नहीं होता। वह तो प्रसन्नता और आनंद देता है।' बुद्ध कुछ और कहते, इसके पहले वह वहां से चला गया।

यह बात सार्वजनिक बहस बनकर राजा प्रसेनजित तक पहुंची। उन्होने रानी के समक्ष हुई बातचीत में बुद्ध को गलत ठहराया। रानी बुद्ध की बात का मर्म जानती थीं, इसलिए उन्होने बुद्ध के द्वारा उस बात के समर्थन में सुनाई गई दो घटनाएं राजा को बताते हुए कहा, 'महाराज! श्रावस्ती में हाल ही एक महिला अपनी मां की मृत्यु होने से दुख में पागल हो गई। लड़की का विवाह किसी और से हो जाने पर उसके प्रेमी ने आत्महत्या कर ली। इससे यही प्रकट होता है कि लगाव से दुख होता है। क्या आप राजकुमारी से प्रेम करते हैं?' राजा चकित होकर बोले, 'अवश्य ही करता हूँ।' रानी ने फिर प्रश्न किया, 'यदि वह किसी दुर्घटना की शिकार हो जाए तो क्या आपको दुख न होगा?' राजा ने स्वीकार किया कि उन्हें दुख होगा। अब वे बुद्ध की बात से पूर्णतः सहमत हुए। वस्तुतः लगाव या प्रेम अल्पकालीन आनंद देता है। प्रिय पात्र के अभाव या उसे कष्ट में देख यह प्रेम दुख में परिणत होकर तकलीफ देता है, इसलिए अपने प्रेम को संयम की लगाम से कस कर रखें।

फिलीपिंस। ब्र.कु.डॉ.निर्मला, ब्र.कु.मीरा, ब्र.कु.रजनी, ब्र.कु.भावना, ब्र.कु.चार्ली तथा एशिया क्षेत्र के नेशनल व सेंटर को-आर्डिनेटर्स समूह चित्र में।